

अध्याय ~5

सन्धि

जब दो वर्णों का मेल होता है, तो इस प्रकार बने शब्द के उच्चारण और लेखन में अन्तर हो जाता है अर्थात् शब्दों के मूल स्वरूप में भिन्नता आ जाती है। शब्दों अथवा वर्णों के ऐसे मेल से परिचित होने के लिए 'सन्धि' का ज्ञान आवश्यक होता है।



सन्धि से तात्पर्य

- सन्धि का शाब्दिक अर्थ **मेल** होता है। दो समीपवर्ती वर्णों या ध्वनियों के संयोग से होने वाले परिवर्तन या विकार को सन्धि कहते हैं।
- सन्धि करते समय कभी-कभी एक अक्षर में, कभी-कभी दोनों अक्षरों में परिवर्तन होता है। सन्धि में पहले शब्द के **अन्तिम वर्ण** तथा दूसरे शब्द के **प्रथम वर्ण** का मेल होता है; जैसे—सुर + इन्द्र = सुरेन्द्र विद्या + आलय = विद्यालय
- सन्धि के नियमों द्वारा बनाए गए वर्णों या शब्दों को पुनः मूल अर्थात् प्रारम्भिक अवस्था में ले आने को **सन्धि-विच्छेद** कहते हैं; जैसे—परिच्छेद = परि + छेद नयन = ने + अयन आदि। सन्धि वहीं होती है, जहाँ ध्वनियों (वर्णों) के मेल के फलस्वरूप उनमें परिवर्तन हो। ध्वनियों के पास-पास होने पर भी यदि उनमें परिवर्तन न हो, तो उसे सन्धि नहीं बल्कि संयोग कहते हैं; जैसे—कालातीत (काल+अतीत) में सन्धि है, कालयोग (काल + योग) में नहीं।

सन्धि के प्रकार

सन्धि तीन प्रकार की होती है

स्वर सन्धि दो स्वरों के मेल से उत्पन्न विकार को स्वर सन्धि कहते हैं; जैसे—'हिम' और 'आलय' में, हिम में **अ** (स्वर वर्ण) तथा आलय में **आ** (स्वर वर्ण) है।

व्यंजन सन्धि सन्धि का प्रथम वर्ण यदि व्यंजन हो तो वहाँ व्यंजन सन्धि होती है; जैसे—'दिक्' और 'अम्बर' में, दिक् में **क** (व्यंजन वर्ण) है।

विसर्ग सन्धि सन्धि के प्रथम वर्ण में यदि विसर्ग का प्रयोग हो रहा है, तो वहाँ विसर्ग सन्धि होती है; जैसे—'निः' और 'शब्द' में **निः** (विसर्ग वर्ण) है।

स्वर सन्धि

- स्वर के साथ स्वर का मेल होने पर जो परिवर्तन होता है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं; जैसे—
देव + आलय = देवालय वीर + आंगना = वीरांगना

- स्वर सन्धि के निम्नलिखित पाँच भेद हैं

1. दीर्घ सन्धि
2. गुण सन्धि
3. वृद्धि सन्धि
4. यण् सन्धि
5. अयादि सन्धि

1. **दीर्घ सन्धि** इस सन्धि का सूत्र **अकः सवर्णे दीर्घ** होता है। यदि ह्रस्व ('अ', 'इ', 'उ') या दीर्घ (आ, ई, ऊ) स्वर एक-दूसरे के पश्चात् आ जाएँ तो वे मिलकर दीर्घ **आ, ई, ऊ** हो जाते हैं। इस परिवर्तन को दीर्घ सन्धि कहते हैं; जैसे—

सन्धि

उदाहरण

अ + अ = आ	पुष्प + अवली = पुष्पावली
	देव + अर्चन = देवार्चन
अ + आ = आ	हिम + आलय = हिमालय
	सत्य + आग्रह = सत्याग्रह
आ + अ = आ	माया + अधीन = मायाधीन
	सीमा + अंत = सीमांत
आ + आ = आ	विद्या + आलय = विद्यालय
	महा + आनंद = महानंद
इ + इ = ई	कवि + इच्छा = कवीच्छा
	मुनि + इंद्र = मुनींद्र
इ + ई = ई	हरि + ईश = हरीश
	परि + ईक्षा = परीक्षा
ई + इ = ई	मही + इन्द्र = महीन्द्र
	लक्ष्मी + इच्छा = लक्ष्मीच्छा
ई + ई = ई	नदी + ईश = नदीश
	योगी + ईश्वर = योगीश्वर
उ + उ = ऊ	सु + उक्ति = सूक्ति
	विधु + उदय = विधूदय
उ + ऊ = ऊ	सिन्धु + ऊर्मि = सिन्धूर्मि
	धातु + ऊष्मा = धातूष्मा
ऊ + उ = ऊ	भू + उद्धार = भूद्धार
ऊ + ऊ = ऊ	भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व

2. **गुण सन्धि** इस सन्धि का सूत्र **आद्गुण** होता है। जब अ अथवा आ के आगे 'इ' या 'ई', 'उ' या 'ऊ' तथा 'ऋ' स्वर आता है तो क्रमशः **ए, ओ** और **अर्** हो जाता है, इस परिवर्तन को गुण सन्धि कहते हैं; जैसे—

सन्धि	उदाहरण
अ + इ = ए	उप + इन्द्र = उपेन्द्र पुष्प + इन्द्र = पुष्पेन्द्र
अ + ई = ए	गण + ईश = गणेश सोम + ईश = सोमेश
आ + इ = ए	महा + इन्द्र = महेन्द्र राजा + इन्द्र = राजेन्द्र
आ + ई = ए	रमा + ईश = रमेश महा + ईश = महेश
अ + उ = ओ	चन्द्र + उदय = चन्द्रोदय वीर + उचित = वीरोचित
अ + ऊ = ओ	समुद्र + ऊर्मि = समुद्रोर्मि सूर्य + ऊर्जा = सूर्योर्जा
आ + उ = ओ	महा + उत्सव = महोत्सव गंगा + उदक = गंगोदक
आ + ऊ = ओ	गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि महा + ऊर्मि = महोर्मि
अ + ऋ = अर्	देव + ऋषि = देवर्षि
आ + ऋ = अर्	महा + ऋषि = महर्षि

3. **वृद्धि सन्धि** इस सन्धि का सूत्र **वृद्धिरेचि** होता है। जब अ या आ के आगे 'ए' या 'ऐ' आता है तो दोनों का **ऐ** हो जाता है। इसी प्रकार 'अ' या 'आ' के आगे 'ओ' या 'औ' आता है तो दोनों का **औ** हो जाता है, इसे वृद्धि सन्धि कहते हैं; जैसे—

सन्धि	उदाहरण
अ + ए = ऐ	पुत्र + एषणा = पुत्रैषणा लोक + एषणा = लोकैषणा
अ + ऐ = ऐ	मत + ऐक्य = मतैक्य धन + ऐश्वर्य = धनैश्वर्य
आ + ए = ऐ	सदा + एव = सदैव तथा + एव = तथैव
आ + ऐ = ऐ	महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य रमा + ऐश्वर्य = रमैश्वर्य
अ + ओ = औ	जल + ओकस = जलौकस दंत + ओष्ठ = दंतौष्ठ
अ + औ = औ	परम + औषध = परमौषध परम + औदार्य = परमौदार्य
आ + ओ = औ	महा + औषधि = महौषधि महा + ओज = महौज
आ + औ = औ	महा + औदार्य = महौदार्य महा + औषध = महौषध

4. **यण् सन्धि** इस सन्धि का सूत्र **इको यणचि** होता है। जब इ-ई, उ-ऊ तथा ऋ के आगे कोई भिन्न स्वर आता है तो ये क्रमशः **य, व्** तथा **र्** में परिवर्तित हो जाते हैं, इस परिवर्तन को यण् सन्धि कहते हैं; जैसे—

सन्धि	उदाहरण
इ + अ = य	अति + अल्प = अत्यल्प अति + अधिक = अत्यधिक
इ + आ = या	इति + आदि = इत्यादि अति + आचार = अत्याचार
इ + उ = यु	अभि + उदय = अभ्युदय प्रति + उत्तर = प्रत्युत्तर
इ + ऊ = यू	नि + ऊन = न्यून प्रति + ऊष = प्रत्यूष
इ + ए = ये	अधि + एषणा = अध्येषणा प्रति + एक = प्रत्येक
ई + आ = या	देवी + आलय = देव्यालय सखी + आगमन = सख्यागमन
ई + ऐ = यै	देवी + ऐश्वर्य = देव्यैश्वर्य नदी + ऐश्वर्य = नद्यैश्वर्य
उ + अ = व	अनु + अय = अन्वय मनु + अन्तर = मन्वन्तर
उ + आ = वा	सु + आगत = स्वागत अनु + आदेश = अन्वादेश
उ + इ = वि	अनु + इत = अन्वित धातु + इक = धात्विक
उ + ए = वे	अनु + एषण = अन्वेषण प्रभु + एषणा = प्रभ्वेषणा
उ + ओ = वो	मधु + ओदन = मध्वोदन लघु + ओष्ठ = लघ्वोष्ठ
उ + औ = वौ	मधु + औषध = मध्वौषध गुरु + औदार्य = गुर्वौदार्य
ऊ + आ = वा	भू + आदि = भ्वादि वधू + आगमन = वध्वागमन
ऋ + अ = र	पितृ + अनुमति = पित्रनुमति पितृ + अनुदेश = पित्रनुदेश
ऋ + आ = रा	पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा
ऋ + इ = रि	मातृ + इच्छा = मात्रिच्छा पितृ + इच्छा = पित्रिच्छा

5. **अयादि सन्धि** इस सन्धि का सूत्र **एचोवयाव** होता है। जब 'ए', 'ऐ', 'ओ' और 'औ' के बाद कोई भिन्न स्वर आता है, तो 'ए' का **अय**, 'ऐ' का **आय्**, 'ओ' का **अव्** और 'औ' का **आव्** हो जाता है; इस परिवर्तन को अयादि सन्धि कहते हैं;

जैसे—

सन्धि

उदाहरण

ए + अ = अय

ने + अयन = नयन

चे + अयन = चयन

ऐ + अ = आय

नै + अक = नायक

विधै + अक = विधायक

ऐ + इ = आयि

नै + इका = नायिका

गै + इका = गायिका

ओ + अ = अव

पो + अन = पवन

श्रो + अन = श्रवण

ओ + इ = अवि

पो + इत्र = पवित्र

गो + इनि = गविनी

ओ + ई = अवी

गो + ईश = गवीश

रो + ईश = रवीश

औ + अ = आव

पौ + अक = पावक

धौ + अक = धावक

औ + इ = आवि

भौ + इनि = भाविनी

नौ + इक = नाविक

औ + उ = आवु

भौ + उक = भावुक

व्यंजन सन्धि

व्यंजन के पश्चात् व्यंजन या स्वर का मेल होने से जो परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन सन्धि कहते हैं; जैसे—

दिक् + गज = दिगज (क् + ग = गग)

सुप् + अन्त = सुबन्त (प + अ = बं)

व्यंजन सन्धि के प्रमुख नियम इस प्रकार हैं

1. **वर्ग के पहले वर्ण का तीसरे वर्ण में परिवर्तन** यदि स्पर्श या वर्गीय व्यंजनों के प्रथम वर्ण; 'क्', 'च्', 'ट्', 'त्', 'प्' के आगे कोई स्वर अथवा किसी वर्ग का तीसरा या चौथा वर्ण अथवा 'य', 'र', 'ल', 'व' आए तो 'क्', 'च्', 'ट्', 'त्', 'प्' के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण अर्थात् 'क' के स्थान पर 'ग', 'च' के स्थान पर 'ज', 'ट' के स्थान पर 'ड', 'त' के स्थान पर 'द' और 'प' के स्थान पर 'ब' हो जाता है।

	1 वर्ण	2 वर्ण	3 वर्ण	4 वर्ण	5 वर्ण	6 वर्ण
1 वर्ण	क	क	ख	ग	घ	ङ
2 वर्ण	च	च	छ	ज	झ	ञ
3 वर्ण	ट	ट	ठ	ड	ढ	ण
4 वर्ण	त	त	थ	द	ध	न
5 वर्ण	प	प	फ	ब	भ	म

जैसे—

क् का ग होना दिक् + अम्बर = दिगम्बर

वाक् + ईश = वागीश

च् का ज होना अच् + अन्त = अजन्त

अच् + आदि = अजादि

ट् का ड होना

षट् + आनन = षडानन

षट् + दर्शन = षडदर्शन

त् का द होना

सत् + आचार = सदाचार

जगत् + आनन्द = जगदानन्द

उत् + योग = उद्योग

प् का ब होना

सुप् + अन्त = सुबन्त

अप् + ज = अब्ज

2. **वर्ग के पहले वर्ण का पाँचवें वर्ण में परिवर्तन** यदि स्पर्श व्यंजनों के प्रथम वर्ण अर्थात् 'क्', 'च्', 'ट्', 'त्', 'प्' के आगे कोई अनुनासिक व्यंजन (प्रायः न या म) आए तो प्रथम वर्ण के बदले उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण 'ङ', 'ञ', 'ण', 'न', 'म' (अनुनासिक वर्ण) हो जाता है।

	1 वर्ण	2 वर्ण	3 वर्ण	4 वर्ण	5 वर्ण	6 वर्ण
1 वर्ण	क	क	ख	ग	घ	ङ
2 वर्ण	च	च	छ	ज	झ	ञ
3 वर्ण	ट	ट	ठ	ड	ढ	ण
4 वर्ण	त	त	थ	द	ध	न
5 वर्ण	प	प	फ	ब	भ	म

जैसे—

क् का ड होना

वाक् + मय = वाङ्मय

वाक् + मात्र = वाङ्मात्र

च् का ज होना

रुच् + मय = रुज्मय

ट् का ण होना

षट् + मास = षण्मास

षट् + मुख = षण्मुख

त् का न होना

सत् + मार्ग = सन्मार्ग

उत + नति = उन्नति

प् का म होना

अप् + मय = अम्मय

3. **'छ' सम्बन्धी नियम** जब किसी ह्रस्व या दीर्घ स्वर के आगे 'छ' आता है तो 'छ' के पहले च् आ जाता है; जैसे—

परि + छेद = परिच्छेद

आ + छादन = आच्छादन

लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया

पद + छेद = पदच्छेद

गृह + छिद्र = गृहच्छिद्र

4. **'म' सम्बन्धी नियम**

- **'म' का पंचमाक्षर में परिवर्तन** यदि 'म्' के आगे कोई स्पर्श व्यंजन आए तो 'म्' के स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाता है; जैसे—

शम् + कर = शङ्कर या शंकर

सम् + चय = संचय

घम् + टा = घण्टा

सम् + तोष = सन्तोष

- 'म' का अनुस्वार में परिवर्तन यदि म के आगे कोई अन्तस्थ या ऊष्म व्यंजन आए अर्थात् 'य', 'र', 'ल', 'व', 'श', 'ष', 'स्', 'ह' आए तो म अनुस्वार (२) में बदल जाता है; जैसे—

सम् + सार = संसार
 सम् + योग = संयोग
 स्वयम् + वर = स्वयंवर
 सम् + रक्षा = संरक्षा

- 'म्' में परिवर्तन न होना 'म्' के बाद 'म' आने पर कोई परिवर्तन नहीं होता है; जैसे—

सम् + मान = सम्मान
 सम् + मति = सम्मति

5. 'त्' सम्बन्धी नियम

- यदि 'त्' या 'द' के आगे 'ज्' या 'झ' आए तो 'त्' या 'द', ज में बदल जाता है; जैसे—

उत् + ज्वल = उज्ज्वल
 विपद् + जाल = विपज्जाल
 सत् + जन = सज्जन
 सत् + जाति = सज्जाति
 उत् + झटिका = उज्झटिका

- यदि 'त्' या 'द' के आगे 'श्' आए तो 'त्' या 'द' का च् और 'श्' का छ् हो जाता है; जैसे—

उत् + श्वास = उच्छ्वास
 तत् + शरीर = तच्छरीर

- 'त्' के बाद यदि 'ट', 'ड' हो तो 'त्' क्रमशः ट्, ड् में बदल जाता है; जैसे—

उत् + डयन = उड्डयन
 बृहत् + टीका = बृहट्टीका

- 'त्' के बाद यदि 'ल्' हो तो 'त्', ल् में बदल जाता है; जैसे—

तत् + लीन = तल्लीन
 उत् + लंघन = उल्लंघन

- 'त' के बाद यदि 'ह' हो तो 'त्' के स्थान पर द् और 'ह' के स्थान पर ध् हो जाता है; जैसे—

उत् + हार = उद्धार
 पद् + हति = पद्धति

- 'त्' के बाद यदि 'च', 'छ' हो तो 'त्' का च् हो जाता है; जैसे—

उत् + चारण = उच्चारण
 सत् + चरित्र = सच्चरित्र

- यदि 'च्' या 'ज्' के बाद 'न्' आए तो 'न्' के स्थान पर 'ज्ञ' हो जाता है; जैसे—

यज् + न = यज्ञ
 याच् + न = याज्ञ

- 6. 'स' सम्बन्धी नियम यदि 'अ', 'आ' को छोड़कर किसी भी स्वर के आगे 'स्' आता है तो बहुधा 'स्' के स्थान पर ष् हो जाता है; जैसे—

अभि + सेक = अभिषेक
 वि + सम = विषम
 नि + सेध = निषेध
 सु + सुप्त = सुषुप्त

- 7. ट, ठ सम्बन्धी नियम 'ष्' के पश्चात् 'त' या 'थ' आने पर उसके स्थान पर क्रमशः ट और ठ हो जाता है; जैसे—

आकृष् + त = आकृष्ट
 तुष् + त = तुष्ट
 पृष् + थ = पृष्ट
 षष् + थ = षष्ट

- 8. 'न' सम्बन्धी नियम यदि 'ऋ', 'र', 'ष' के बाद 'न' आए और इनके मध्य में कोई स्वर, 'क' वर्ग, 'प' वर्ग, अनुस्वार तथा 'य', 'व', 'ह' में से कोई वर्ण आए तो 'न' का ण हो जाता है; जैसे—

भर + अन = भरण
 भूष + अन = भूषण
 राम + अयन = रामायण
 परि + मान = परिमाण
 ऋ + न = ऋण

विसर्ग सन्धि

विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के संयोग से जो विकार होता है, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं; जैसे—

मनः + हर = मनोहर
 दुः + आशा = दुराशा

विसर्गों का प्रयोग संस्कृत को छोड़कर अन्य किसी भी भाषा में नहीं होता है। हिन्दी में भी विसर्गों का प्रयोग नहीं के बराबर होता है। कुछ ही शब्दों में हिन्दी भाषा में विसर्ग प्रयुक्त होते हैं; जैसे—अतः, पुनः, प्रायः, शनैः आदि।

इसके प्रमुख नियम निम्नलिखित हैं

1. विसर्ग का श्, स् में परिवर्तन

- यदि विसर्ग के आगे 'श', 'स' आए तो विसर्ग क्रमशः श्, स् में बदल जाता है; जैसे—

निः + शंक = निश्शंक
 दुः + शासन = दुश्शासन
 निः + शब्द = निश्शब्द
 निः + सन्देह = निस्सन्देह
 निः + संग = निस्संग
 निः + स्वार्थ = निस्स्वार्थ

- यदि विसर्ग के बाद 'च-छ', 'ट-ठ' तथा 'त-थ' आए तो विसर्ग क्रमशः श्, ष्, स् में बदल जाते हैं; जैसे—

निः + तार = निस्तार
 दुः + चरित्र = दुश्चरित्र
 निः + छल = निश्छल
 धनुः + टंकार = धनुष्टंकार
 निः + टुर = निष्टुर

- 2. विसर्ग का 'ष्' में परिवर्तन यदि विसर्ग से पहले 'इ' या 'उ' आए और बाद में क, ख, ट, ठ, प, फ में से कोई वर्ण आए तो विसर्ग ष् में बदल जाता है; जैसे—

निः + कर्म = निष्कर्म
 निः + काम = निष्काम
 निः + करुण = निष्करुण
 निः + पाप = निष्पाप

नि: + कपट = निष्कपट

नि: + फल = निष्फल

नि: + टुर = निष्ठुर

3. विसर्ग का लोप हो जाना

- यदि विसर्ग से पहले 'इ' या 'उ' हो और बाद में 'र' आए तो विसर्ग का लोप हो जाएगा और 'इ' तथा 'उ' दीर्घ ई, ऊ में बदल जाएंगे; जैसे—

नि: + रव = नीरव

नि: + रोग = नीरोग

नि: + रस = नीरस

- यदि विसर्ग के बाद 'छ' हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है तथा च् जुड़ जाता है; जैसे—

छत्र: + छाया = छत्रच्छाया

अनु: + छेद = अनुच्छेद

- यदि विसर्ग से पहले 'अ' या 'आ' हो और विसर्ग के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो विसर्ग का लोप हो जाता है; जैसे—

अत: + एव = अतएव

4. विसर्ग में कोई परिवर्तन न होना यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो तथा बाद में 'क', 'ख', 'प', 'फ' हो, तो विसर्ग में कोई विकार (परिवर्तन) नहीं होता; जैसे—

प्रात: + काल = प्रातःकाल

पय: + पान = पयःपान

अन्त: + करण = अन्तःकरण

5. विसर्ग का 'र' में परिवर्तन

- यदि विसर्ग से पहले 'अ' या 'आ' को छोड़कर कोई स्वर हो और बाद में वर्ग के तृतीय, चतुर्थ और पंचम वर्ण अथवा 'य', 'र', 'ल', 'व' में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग र में बदल जाता है; जैसे—

दु: + निवार = दुर्निवार

दु: + बोध = दुर्बोध

नि: + गुण = निर्गुण

नि: + धन = निर्धन

नि: + झर = निर्झर

यदि विसर्ग से पहले 'अ', 'आ' को छोड़कर कोई अन्य स्वर आए और बाद में कोई भी स्वर आए तो भी विसर्ग र में बदल जाता है;

जैसे—

नि: + आशा = निराशा

नि: + ईह = निरीह

नि: + उपाय = निरुपाय

नि: + अर्थक = निरर्थक

6. विसर्ग का 'ओ' में परिवर्तन यदि विसर्ग से पहले 'अ' आए और बाद में 'य', 'र', 'ल', 'व' या 'ह' आए तो विसर्ग का लोप हो जाता है तथा विसर्ग ओ में बदल जाता है; जैसे—

मन: + विकार = मनोविकार

मन: + रथ = मनोरथ

पुर: + हित = पुरोहित

मन: + रम = मनोरम

हिन्दी की कुछ विशेष सन्धियाँ

हिन्दी की कुछ अपनी विशेष सन्धि हैं, इनकी रूपरेखा अभी तक विशेष रूप से स्पष्ट निर्धारित नहीं हुई है, फिर भी इनका ज्ञान हमारे लिए आवश्यक है। हिन्दी की प्रमुख विशेष सन्धियाँ निम्नलिखित हैं

1. 'जब', 'तब', 'कब', 'सब' और 'अब' आदि शब्दों के अन्त में (पीछे) 'ही' आने पर 'ह' का भ हो जाता है और 'ब' का लोप भी हो जाता है; जैसे—

जब + ही = जभी

तब + ही = तभी

कब + ही = कभी

सब + ही = सभी

अब + ही = अभी

2. 'जहाँ', 'कहाँ', 'यहाँ', 'वहाँ' आदि शब्दों के बाद 'ही' आने पर ही (स्वर सहित) लुप्त हो जाता है और अन्तिम ई पर अनुस्वार (◌ं) लग जाता है; जैसे—

यहाँ + ही = यहीं

कहाँ + ही = कहीं

वहाँ + ही = वहीं

जहाँ + ही = जहीं

3. कहीं-कहीं संस्कृत के 'र' लोप, दीर्घ और यण् आदि सन्धियों के नियम हिन्दी में नहीं लागू होते हैं; जैसे—

अन्तर + राष्ट्रीय = अन्तर्राष्ट्रीय

स्त्री + उपयोगी = स्त्रियोपयोगी

उपरि + उक्त = उपर्युक्त

कुछ महत्वपूर्ण सन्धि-विच्छेद

शब्द	सन्धि-विच्छेद	शब्द	सन्धि-विच्छेद
दीर्घ सन्धि			
राष्ट्राध्यक्ष	राष्ट्र + अध्यक्ष	नवांकुर	नव + अंकुर
नयनाभिराम	नयन + अभिराम	सहानुभूति	सह + अनुभूति
युगान्तर	युग + अन्तर	दीक्षान्त	दीक्षा + अन्त
शरणार्थी	शरण + अर्थी	वार्तालाप	वार्ता + आलाप
सत्यार्थी	सत्य + अर्थी	पुस्तकालय	पुस्तक + आलय
दिवसावसान	दिवस + अवसान	विकलांग	विकल + अंग
प्रसंगानुकूल	प्रसंग + अनुकूल	आनन्दातिरेक	आनन्द + अतिरेक
विद्यानुराग	विद्या + अनुराग	कामायनी	काम + अयनी
परमावश्यक	परम + आवश्यक	दीपावली	दीप + अवली
उदयाचल	उदय + अचल	दावानल	दाव + अनल
ग्रामांचल	ग्रामा + अंचल	महात्मा	महा + आत्मा
ध्वंसावशेष	ध्वंस + अवशेष	हिमालय	हिम + आलय
हस्तान्तरण	हस्त + अन्तरण	देशान्तर	देश + अन्तर
परमानन्द	परम + आनन्द	सावधान	स + अवधान
रत्नाकर	रत्न + आकर	तीर्थाटन	तीर्थ + अटन
देवालय	देव + आलय	विचाराधीन	विचार + अधीन
धर्मात्मा	धर्म + आत्मा	मुरारि	मुर + अरि
आग्नेयास्त्र	आग्नेय + अस्त्र	कुशासन	कुश + आसन
मर्मन्तक	मर्म + अन्तक	उत्तमांग	उत्तम + अंग
रामायण	राम + अयन	सावयव	स + अवयव
सुखानुभूति	सुख + अनुभूति	भग्नावशेष	भग्न + अवशेष
आज्ञानुपालन	आज्ञा + अनुपालन	धर्माधिकारी	धर्म + अधिकारी
देहान्त	देह + अन्त	जनार्दन	जन + अर्दन
गीतांजलि	गीत + अंजलि	अधिकांश	अधिक + अंश
मात्राज्ञा	मातृ + आज्ञा	गौरीश	गौरी + ईश
भयाकुल	भय + आकुल	लक्ष्मीश	लक्ष्मी + ईश
त्रिपुरारि	त्रिपुर + अरि	पृथ्वीश्वर	पृथ्वी + ईश्वर
आयुधागार	आयुध + आगार	अनूदित	अनु + उदित
स्वर्गारोहण	स्वर्ग + आरोहण	मंजूषा	मंजु + उषा
प्राणायाम	प्राण + आयाम	गुरुपदेश	गुरु + उपदेश
कारागार	कारा + आगार	साधूपदेश	साधु + उपदेश
शाकाहारी	शाक् + आहारी	बहूद्देशीय	बहु + उद्देशीय
फलाहार	फल + आहार	वधूपालम्भ	वधु + उपालम्भ
गदाघात	गदा + आघात	भानूदय	भानु + उदय
स्थानापन्न	स्थान + आपन्न	मधूत्सव	मधु + उत्सव
कंटकाकीर्ण	कंटक + आकीर्ण	बहूर्ज	बहु + उर्ज
स्नेहाकांक्षी	स्नेह + आकांक्षी	सिन्धूर्मि	सिन्धु + ऊर्मि
महामात्य	महा + अमात्य	चमूत्तम	चमू + उत्तम
चिकित्सालय	चिकित्सा + आलय	लघूत्तम	लघु + उत्तम
रचनात्मक	रचना + आत्मक	वधूल्लास	वधू + उल्लास

शब्द	सन्धि-विच्छेद	शब्द	सन्धि-विच्छेद
क्षितीन्द्र	क्षिति + इन्द्र	भूर्ध्व	भू + ऊर्ध्व
अधीश्वर	अधि + ईश्वर	पितृण	पितृ + ऋण
प्रतीक्षा	प्रति + ईक्षा	मातृण	मातृ + ऋण
परीक्षा	परि + ईक्षा	महीन्द्र	मही + इन्द्र
गिरीन्द्र	गिरि + इन्द्र	श्रीश	श्री + ईश
मुनीन्द्र	मुनि + इन्द्र	सतीश	सती + ईश
अधीक्षक	अधि + ईक्षक	फणीन्द्र	फणी + इन्द्र
हरीश	हरि + ईश	रजनीश	रजनी + ईश
अधीन	अधि + इन	नारीश्वर	नारी + ईश्वर
गिरीश	गिरि + ईश	देवीच्छा	देवी + इच्छा
वारीश	वारि + ईश	लक्ष्मीच्छा	लक्ष्मी + इच्छा
गणेश	गण + ईश	परमेश्वर	परम + ईश्वर
सुधीन्द्र	सुधि + इन्द्र	परोपकार	पर + उपकार
अभीष्ट	अभि + इष्ट	सूचित	सु + उक्ति

गुण सन्धि

योगेन्द्र	योग + इन्द्र	शुभेच्छा	शुभ + इच्छा
मानवेन्द्र	मानव + इन्द्र	गजेन्द्र	गज + इन्द्र
मृगेन्द्र	मृग + इन्द्र	जितेन्द्रिय	जित + इन्द्रिय
पूर्णेन्द्र	पूर्ण + इन्द्र	सुरेन्द्र	सुर + इन्द्र
यथेष्ट	यथा + इष्ट	विवाहेतर	विवाह + इतर
हितेच्छा	हित + इच्छा	साहित्येतर	साहित्य + इतर
शब्देतर	शब्द + इतर	भारतेन्द्र	भारत + इन्द्र
उपदेष्टा	उप + दिष्टा	स्वेच्छा	स्व + इच्छा
अन्त्येष्टि	अन्त्य + इष्टि	बालेन्दु	बाल + इन्दु
राजर्षि	राज + ऋषि	नीलोत्पल	नील + उत्पल
देशोपकार	देश + उपकार	सूर्योदय	सूर्य + उदय
रोगोपचार	रोग + उपचार	ज्ञानोदय	ज्ञान + उदय
पुरुषोचित	पुरुष + उचित	दुग्धोपजीवी	दुग्ध + उपजीवी
अन्त्योदय	अन्त्य + उदय	वेदोक्त	वेद + उक्त
महोदय	महा + उदय	विद्योन्नति	विद्या + उन्नति
महोपदेशक	महा + उपदेशक	महोपकार	महा + उपकार
दलितोत्थान	दलित + उत्थान	सर्वोपरि	सर्व + उपरि
सोद्देश्य	स + उद्देश्य	जनोपयोगी	जन + उपयोगी
सोल्लास	स + उल्लास	भावोद्रेक	भाव + उद्रेक
धीरोद्धत	धीर + उद्धत	सर्वोत्तम	सर्व + उत्तम
मानवोचित	मानव + उचित	कथोपकथन	कथ + उपकथन
नवोन्मेष	नव + उन्मेष	नवोदय	नव + उदय
महोर्मि	महा + ऊर्मि	महोर्जा	महा + ऊर्जा
सूर्योष्मा	सूर्य + उष्मा	महोत्सव	महा + उत्सव
नवोद्गा	नव + ऊद्गा	क्षुधोत्तेजन	क्षुधा + उत्तेजन
देवर्षि	देव + ऋषि	महर्षि	महा + ऋषि

शब्द	सन्धि-विच्छेद	शब्द	सन्धि-विच्छेद
वृद्धि सन्धि			
प्रियैषी	प्रिय + एषी	पुत्रैषणा	पुत्र + एषणा
लोकैषणा	लोक + एषणा	देवौदार्य	देव + औदार्य
परमौषध	परम + औषध	हितैषी	हित + एषी
जलौध	जल + ओध	वनौषधि	वन + ओषधि
धनैषी	धन + एषी	महौदार्य	महा + औदार्य
विश्वैक्य	विश्व + एक्य	स्वैच्छिक	स्व + ऐच्छिक
महैश्वर्य	महा + ऐश्वर्य	अधरोष्ठ	अधर + ओष्ठ
शुद्धोधन	शुद्ध + ओधन	स्वागत	सु + आगत
यण् सन्धि			
व्याकरण	वि + आकरण	प्रत्युत्तर	प्रति + उत्तर
उपर्युक्त	उपरि + उक्त	उभ्युत्थान	अभि + उत्थान
अध्यात्म	अधि + आत्म	अत्युक्ति	अति + उक्ति
अत्युत्तम	अति + उत्तम	सख्यागमन	सखी + आगमन
स्वच्छ	सु + अच्छ	तन्वंगी	तनु + अंगी
समन्वय	सम् + अनु + अय	अन्वेषण	अनु + एषण
अभ्यास	अभि + आस	पर्यवसान	परि + अवसान
रीत्यनुसार	रीति + अनुसार	अभ्यर्थना	अभि + अर्थना
प्रत्यभिज्ञ	प्रति + अभिज्ञ	प्रत्युपकार	प्रति + उपकार
त्र्यम्बक	त्रि + अम्बक	अत्यल्प	अति + अल्प
जात्यभिमान	जाति + अभिमान	गत्यानुसार	गति + अनुसार
देव्यागमन	देवी + आगमन	गुर्वौदार्य	गुरु + औदार्य
लघ्वोष्ठ	लघु + ओष्ठ	मात्रुपदेश	मातृ + उपदेश
पर्यावरण	परि + आवरण	ध्वन्यात्मक	ध्वनि + आत्मक
अभ्यागत	अभि + आगत	अत्याचार	अति + आचार
व्याख्यान	वि + आख्यान	मन्वन्तर	मनु + अन्तर
अयादि सन्धि			
नायक	नै + अक	गायक	गै + अक
गायन	गै + अन	विधायक	विधै + अक
पवन	पो + अन	हवन	हो + अन
शावक	शौ + अक	श्रावण	श्रौ + अन
नाविक	नौ + इक	भावुक	भौ + उक
व्यंजन सन्धि			
ऋग्वेद	ऋक् + वेद	सद्धर्म	सत् + धर्म
जगदाधार	जगत् + आधार	उद्वेग	उत् + वेग
अर्जत	अच् + अन्त	षडंग	षट् + अंग
जगदम्बा	जगत् + अम्बा	जगद्गुरु	जगत् + गुरु
जगज्जनी	जगत् + जननी	उज्ज्वल	उत् + ज्वल

शब्द	सन्धि-विच्छेद	शब्द	सन्धि-विच्छेद
सज्जन	सत् + जन	सदात्मा	सत् + आत्मा
सदानन्द	सत् + आनन्द	स्यादवाद	स्यात् + वाद
सद्वेग	सत् + वेग	छत्रच्छाया	छत्र + छाया
परिच्छेद	परि + छेद	सन्तोष	सम् + तोष
आच्छादन	आ + छादन	उच्चारण	उत् + चारण
जगन्नाथ	जगत् + नाथ	जगन्मोहिनी	जगत् + मोहिनी
उन्नयन	उत् + नयन	सन्मान	सत् + मान
सन्निकट	सम् + निकट	दण्ड	दम् + ड
सन्त्रास	सम् + त्रास	सच्चिदानन्द	सत् + चित + आनन्द
यावज्जीवन	यावत् + जीवन	तज्जन्य	तद् + जन्य
परोक्ष	पर + उक्ष	सारंग	सार + अंग
अनुषंगी	अनु + संगी	सुषुप्त	सु + सुप्त
प्रतिषेध	प्रति + सेध	षड्दर्शन	षट् + दर्शन
वागीश	वाक् + ईश	उन्मत्	उत् + मत
दिग्ज्ञान	दिक् + ज्ञान	वाग्दान	वाक् + दान
वाग्व्यापार	वाक् + व्यापार	दिग्दिगन्त	दिक् + दिगन्त
सम्यग्दर्शन	सम्यक् + दर्शन	दिग्विजय	दिक् + विजय
विसर्ग सन्धि			
निस्सहाय	निः + सहाय	तपोभूमि	तपः + भूमि
निस्सार	निः + सार	नभोमण्डल	नभः + मण्डल
निश्चल	निः + चल	तमोगुण	तमः + गुण
निष्कलुष	निः + कलुष	तिरोहित	तिरः + हित
निष्काम	निः + काम	दिवोज्योति	दिवः + ज्योति
निष्कासन	निः + कासन	यशोदा	यशः + दा
निश्चय	निः + चय	शिरोभूषण	शिरः + भूषण
दुश्चरित्र	दुः + चरित्र	मनोवांछा	मनः + वांछा
निष्प्रयोजन	निः + प्रयोजन	पुरोगामी	पुरः + गामी
निष्प्राण	निः + प्राण	मनोग्राह्य	मनः + ग्राह्य
निष्प्रभ	निः + प्रभ	निर्मम	निः + मम
निष्पालक	निः + पालक	दुर्जन	दुः + जन
निष्पाप	निः + पाप	निराशा	निः + आशा
प्राणिविज्ञान	प्राणि + विज्ञान	निष्ठुर	निः + दुर
योगीश्वर	योगी + ईश्वर	धनुष्टंकार	धनुः + टंकार
स्वामिभक्त	स्वामी + भक्त	दुश्शासन	दुः + शासन
युववाणी	युव + वाणी	शिरोरेखा	शिरः + रेखा
मनीष	मन + ईष	यजुर्वेद	यजुः + वेद
दुर्दशा	दुः + दशा	नमस्कार	नमः + कार
दुर्लभ	दुः + लभ	शिरस्त्राण	शिरः + त्राण
निर्भय	निः + भय	चतुस्सीमा	चतुः + सीमा
यशोगान	यशः + भूमि	आविष्कार	आविः + कार
दुस्साहस	दुः + साहस		

वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

1. दो वर्णों के मेल से होने वाले विकार को कहते हैं
(उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) सन्धि (b) समास (c) उपसर्ग (d) प्रत्यय
2. सन्धि कितने प्रकार की होती है?
(UPSSSC VDO 2018)
(a) दो (b) तीन (c) चार (d) छः
3. 'षण्मास' का सन्धि-विच्छेद होगा
(CGPSC Pre 2020)
(a) षट् + मास (b) षण् + मास
(c) षट् + मास (d) षन् + मास.
4. 'अ + इ = ए' स्वर सन्धि के किस भेद को व्यक्त करता है?
(उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) दीर्घ सन्धि (b) गुण सन्धि
(c) वृद्धि सन्धि (d) यण् सन्धि
5. 'पवन' शब्द में सन्धि है
(उत्तराखण्ड समूह 'ग' 2019)
(a) गुण सन्धि (b) व्यंजन सन्धि
(c) अयादि सन्धि (d) वृद्धि सन्धि
6. 'ऋग्वेद' का सन्धि-विच्छेद क्या है?
(UPTET 2020)
(a) ऋक् + वेद (b) ऋ + वेद
(c) ऋग + वेद (d) ऋ + गवेद
7. 'उच्छिष्ट' का शुद्ध सन्धि-विच्छेद है
(UPPCS 2016)
(a) उत् + शिष्ट (b) उत् + शिष्ट
(c) उत् + सिष्ट (d) उ + छिष्ट
8. गलत सन्धि-विच्छेद वाला विकल्प चुनिए।
(HTET 2018)
(a) उद् + डयन = उड्डयन (b) पद् + हति = पद्धति
(c) तत् + टीका = तट्टीका (d) शरद् + उल्लास = शरदोल्लास
9. 'व्यर्थ' शब्द में किन वर्णों की सन्धि हुई है?
(UTET 2017)
(a) व + अ (b) वि + अ (c) ई + अ (d) इ + अ
10. 'गुण स्वर सन्धि' का उदाहरण चुनिए।
(HTET 2018)
(a) यमुनोर्मि (b) दध्योदन (c) मनोदशा (d) शिरोरेखा
11. 'यथोचित' का सही सन्धि-विच्छेद है
(UPSSSC कनिष्ठ सहायक 2020)
(a) यथो + उचित (b) यथा + उ + चित
(c) यथा + उचित (d) यथा + ओचित
12. 'विद्यार्थी' का सही सन्धि-विच्छेद है
(UPSSSC कनिष्ठ सहायक 2020)
(a) विद्या + रथी (b) विद्या + अर्थी
(c) विद्या + अर्थी (d) विद्या + आर्थी
13. 'नाविक' का सही सन्धि-विच्छेद है
(UPSSSC कनिष्ठ सहायक 2020)
(a) नौ + विक (b) ना + विक (c) नौ + इक (d) न + आविक
14. 'व्यवहार' का सही सन्धि-विच्छेद है
(UPSSSC कनिष्ठ सहायक 2020)
(a) वि + अव + हार (b) व्यय + हार
(c) व्य + वहार (d) व्य + व + हार
15. 'सावधान' का सही सन्धि-विच्छेद है
(UPSSSC कनिष्ठ सहायक 2020)
(a) साव + धान (b) सा + वधान
(c) स + आवधान (d) स + अवधान
16. 'उड्डयन' के सन्धि-विच्छेद का सही विकल्प कौन-सा है? (UPTET 2018)
(a) उत् + डयन (b) उड् + डयन (c) उच्च + डयन (d) उड् + डयन
17. 'निश्चल' का सही सन्धि-विच्छेद है
(UPSSSC कनिष्ठ सहायक 2020)
(a) निः + चल (b) निश् + चल (c) निस् + चल (d) निः + अचल
18. 'सद्धर्म' का सही सन्धि-विच्छेद है
(UPSSSC कनिष्ठ सहायक 2020)
(a) सद् + धर्म (b) सद् + अधर्म (c) स + धर्म (d) सत् + धर्म
19. सन्धि-विच्छेद सही नहीं है
(CGPSC Pre 2019)
(a) दुस्सन्धि - दुः + सन्धि (b) कोऽपि - कः + अपि
(c) लम्बोष्ठ - लम्ब + ओष्ठ (d) पावक - पो + अक
20. स्वर सन्धि का उदाहरण नहीं है
(उत्तराखण्ड समूह-घ भर्ती परीक्षा 2019)
(a) मतानुसार (b) जगदीश (c) अत्यन्त (d) नरेन्द्र
21. यशः + अर्थी =
(HSSC क्लर्क भर्ती परीक्षा 2019)
(a) यशोथी (b) यशार्थी (c) यशोर्थी (d) यशार्थी
22. 'कुश + आसन' में सन्धि है
(उत्तराखण्ड 'समूह-ग' वन आरक्षी भर्ती परीक्षा 2019)
(a) दीर्घ सन्धि (b) गुण सन्धि (c) वृद्धि सन्धि (d) यण् सन्धि
23. 'सदानन्द' का सन्धि-विच्छेद कीजिए।
(UPSSSC VDO 2018)
(a) सत् + आनन्द (b) सत + आनन्द
(c) सद + आनन्द (d) सदा + आनन्द
24. 'पुस्तकालय' में कौन-सी सन्धि है?
(UPSSSC VDO 2018)
(a) दीर्घ (b) गुण (c) वृद्धि (d) यण
25. 'अभि + उदय' की सन्धि कीजिए।
(UPSSSC VDO 2018)
(a) अभ्युदय (b) अभ्योदय (c) अभीउदय (d) अभिउदय
26. 'रीत्यनुसार' का सही सन्धि-विच्छेद है
(UP लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) रीत्य + अनुसार (b) रीत + अनुसार
(c) रीति + अनुसार (d) रीत्या + अनुसार
27. 'निर्धन' में कौन-सी सन्धि है?
(UP लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) यण् सन्धि (b) व्यंजन सन्धि
(c) विसर्ग सन्धि (d) अयादि सन्धि
28. 'व्याख्यान' में कौन-सी सन्धि है?
(UP स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा 2014)
(a) गुण (b) दीर्घ (c) यण् (d) विसर्ग
29. 'अत्युत्तम' के सन्धि-विच्छेद का सही विकल्प चुनिए
(SSC स्टेनोग्राफर भर्ती परीक्षा 2014)
(a) अति + युत्तम (b) अत्य + उत्तम
(c) अत्यु + उत्तम (d) अति + उत्तम
30. 'हिमांशु' शब्द का सन्धि-विच्छेद कीजिए
(a) हिम + अंशु (b) हिमा + अंशु
(c) हिम + आंशु (d) हिमांश + उ
31. 'सप्त + ऋषि' इससे बनी सन्धि है
(DSSSB असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) दीर्घ (b) यण् (c) व्यंजन (d) गुण
32. 'षट् + रिपु' इससे बनी सन्धि है
(DSSSB असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) व्यंजन (b) यण (c) वृद्धि (d) विसर्ग
33. 'प्रौढ़' का सही सन्धि-विच्छेद है
(DSSSB असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) प्रा + उड् (b) प्र + ऊड्
(c) प्रौ + ढ् (d) प्र + औड्

34. 'कवीश्वर' शब्द का सही सन्धि-विच्छेद बताइए
(a) कवि + ईश्वर (b) कविश + वर
(c) कवि + इश्वर (d) कवी + ईश्वर
35. कौन-से शब्द में व्यंजन सन्धि है? (अन्वेषक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) देवर्षि (b) जानकीश (c) वागीश (d) कवीश
36. 'पंजाब' शब्द का सही सन्धि-विच्छेद क्या है?
(अन्वेषक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) पंज + आब (b) पंजा + ब (c) पंच + आब (d) पंचा + ब
37. व्यंजन सन्धि के उदाहरण हैं (बिहार पुलिस भर्ती परीक्षा 2012)
(a) उल्लास, संगम, तथास्तु (b) सम्भावना, सद्भावना, बहिष्कार
(c) वातावरण, उल्लास, संस्कृत (d) उल्लास, संगम, सम्भावना
38. 'उच्छवास' का सही सन्धि-विच्छेद है (UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2015)
(a) उत् + श्वास (b) उत् + छवास
(c) उच् + श्वास (d) उच् + छवास
39. 'राकेश' का सही सन्धि-विच्छेद है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) राके + ईश (b) राक + एश
(c) राका + ईश (d) राका + इश
40. 'भानूदय' में प्रयुक्त सन्धि का नाम है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) गुण सन्धि (b) दीर्घ सन्धि
(c) व्यंजन सन्धि (d) वृद्धि सन्धि
41. 'अति + आचार' सन्धि-विच्छेद है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) अतिचार का (b) अत्याचार का
(c) अत्यचार का (d) ये सभी
42. 'प्रत्युत्तर' का सही सन्धि-विच्छेद है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) प्र + त्युत्तर (b) प्रति + उत्तर
(c) प्रत + उत्तर (d) प्रत्यु + उत्तर
43. 'उच्छिष्ट' शब्द का विच्छेद है (RPSC पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) उच् + छिष्ट (b) उत् + छिष्ट
(c) उत् + शिष्ट (d) उच् + शिष्ट
44. सच्चिदानन्द का विच्छेद है (RPSC पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) सत् + चित् + आनन्द (b) सच्चिद् + आनन्द
(c) सच्चि + दानन्द (d) सत् + चिद् + आनन्द
45. 'अन्वेषण' का सन्धि-विच्छेद होगा (UKTET 2011)
(a) अन + वेषण (b) अनु + एषण
(c) अनु + ऐषण (d) अनव + एषण
46. व्यंजन सन्धि का उदाहरण है (RPSC पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) उद्यत (b) परमौषध
(c) दुरुपयोग (d) तपोवन
47. गुण सन्धि का उदाहरण है (RPSC पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) महर्षि (b) पावक
(c) अभ्युदय (d) मतैक्य
48. विसर्ग सन्धि का उदाहरण है (RPSC पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) हरिश्चन्द्र (b) हरिशचन्द्र
(c) हरीशचन्द्र (d) दिनेशचन्द्र
- निर्देश (प्र. सं. 49-51) दिए गए सन्धि-विच्छेद में सही विकल्प चुनिए
49. रूपान्तरण (UP वन विभाग 2015)
(a) रूप + अन्तरण (b) रूप + आन्तरण
(c) रुपा + अन्तरण (d) रुपा + आतरण
50. मनोयोग (UP वन विभाग 2015)
(a) मनो: + योग (b) मन : + योग
(c) मन: + आयोग (d) इनमें से कोई नहीं
51. 'दुराशा' (UP वन विभाग 2015)
(a) दुरा + आशा (b) दुरा + शा
(c) दु: + आशा (d) दुर + आशा
52. 'सच्छास्त्र' का उचित विच्छेद निम्न में से कौन-सा है?
(a) सत् + छास्त्र (b) सच् + छास्त्र
(c) सच् + शास्त्र (d) सत् + शास्त्र
53. 'नि: + कलंक' का सही सन्धि शब्द कौन-सा है? (UPSSSC लेखपाल परीक्षा 2015)
(a) निस्कलंक (b) निश्कलंक
(c) निष्कालंक (d) निष्कलंक
54. 'पवन' का सन्धि-विच्छेद कौन-सा है? (UPSSSC लेखपाल परीक्षा 2015)
(a) पब + अन (b) पो + अन
(c) पव + न (d) पो + आन
55. 'उज्ज्वल' का सही सन्धि-विच्छेद होगा (राजस्थान प्राध्यापक चयन परीक्षा 2015)
(a) उज् + वल (b) उज् + ज्वल
(c) उत् + ज्वल (d) उज् + ज्वल
56. 'प्रेरणास्पद' शब्द का सन्धि-विच्छेद होगा (राजस्थान प्राध्यापक चयन परीक्षा 2015)
(a) प्रेरणा + आस्पद (b) प्रेरणा + अस्पद
(c) प्रेरणा + स्पद (d) प्रेरणा + पद
57. 'योगाभ्यास' में कौन-सी सन्धि है? (UKSSSC VDO 2017)
(a) दीर्घ सन्धि (b) गुण सन्धि
(c) वृद्धि सन्धि (d) यण् सन्धि
58. 'मनोहर' शब्द में कौन-सी सन्धि है? (MPPSC 2015)
(a) स्वर सन्धि (b) व्यंजन सन्धि
(c) विसर्ग सन्धि (d) इनमें से कोई नहीं
59. 'नयन' का शुद्ध सन्धि-विच्छेद है (UPPSC Pre 2018)
(a) ने + अन (b) ने + अयन
(c) न + अन (d) नय + अन
60. 'अत्याचार' का सन्धि विच्छेद है (CGPSC Pre 2015)
(a) अति + अचार (b) अती + आचार
(c) अति + आचार (d) अतिअ + चार
61. 'तद्धित' का सन्धि-विच्छेद क्या है? (UPTET 2020)
(a) तत् + धित (b) तद् + हित्
(c) तत् + हित (d) तद् + धित
62. 'उद्विग्न' का सन्धि-विच्छेद क्या है? (UPTET 2020)
(a) उद + दिन्न (b) अत + विन्न
(c) उत् + विग्न (d) उत + दिग्न
63. अ, आ के बाद
(i) इ, ई आए तो ई ई = ए (ii) उ, ऊ आए तो ऊ ऊ = ओ
(iii) ऋ आए तो 'अर्' हो जाता है। इसे कहते हैं
(a) वृद्धि सन्धि (b) गुण सन्धि
(c) अयादि सन्धि (d) दीर्घ सन्धि
64. 'मतैक्य' का सन्धि-विच्छेद है
(a) मत् + एक्य (b) मति + एक्य
(c) मत् + ऐक्य (d) मत + ऐक्य

65. इ, ई, उ, ऊ, ऋ, लृ के बाद (आगे) कोई स्वर आए तो ये क्रमशः य, व, र, ल में बदल जाते हैं। इस परिवर्तन को कहते हैं
(a) गुण (b) अयादि (c) वृद्धि (d) यण्
66. 'बध्वागमन' का सन्धि-विच्छेद है
(a) बधु + आगमन (b) बध्व + आगमन (c) बधू + आगमन (d) बध्वा + गमन
67. उ, ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो ए = अय, ऐ = आय, ओ = अव, औ = आव हो जाता है। इस परिवर्तन को कहते हैं
(a) अयादि (b) गुण (c) दीर्घ (d) वृद्धि
68. 'हिमालय' शब्द का सन्धि-विच्छेद है
(a) हिमा + लय (b) हिमा + अलय (c) हिमा + आलय (d) हिम + आलय
69. 'वागीश' शब्द का सन्धि-विच्छेद है
(a) वाक् + ईश (b) वाक + ईश (c) वाग + ईश (d) वाग + इश
70. 'वाक् + मय' का सन्धि पद होगा
(a) वाग्मय (b) वागमय (c) वाङ्मय (d) वाकमय
71. 'पद + छेद' विग्रह पद का सन्धि शब्द होगा
(a) पदछेद (b) पदछैद (c) पदच्छेद (d) पदच्छैद
72. 'संयोग' शब्द का सन्धि-विच्छेद है
(a) सम् + योग (b) सम + योग (c) सं + योग (d) सम्म + योग
73. 'धनुष्टंकार' शब्द का सन्धि-विच्छेद होगा
(a) धनुः + टंकार (b) धनूः + टंकार (c) धनुष् + टंकार (d) धनुस् + टंकार
74. 'यहीं' शब्द की सन्धि है
(a) यहाँ + ही (b) याहाँ + ही (c) यहा + ही (d) यह + ही
75. दीर्घ सन्धि, गुण सन्धि, वृद्धि सन्धि, यण् सन्धि व अयादि सन्धि-सन्धि के किस मूल भेद के अन्तर्गत सन्निहित हैं?
(a) विसर्ग सन्धि (b) व्यंजन सन्धि (c) स्वर सन्धि (d) इनमें से कोई नहीं
76. विपत् + जाल = विपज्जाल में कौन-सी सन्धि है? (UPSSSC कनिष्ठ सहायक 2019)
(a) स्वर सन्धि (b) व्यंजन सन्धि (c) वृद्धि सन्धि (d) गुण सन्धि
77. स्वर सन्धि कितने प्रकार की होती है? (UPSSSC कनिष्ठ सहायक 2019)
(a) दो (b) तीन (c) चार (d) पाँच
78. 'लघूर्ध्व' में कौन-सी सन्धि है? (CGPCS 2018)
(a) वियोग सन्धि (b) व्यंजन सन्धि (c) स्वर सन्धि (d) विसर्ग सन्धि
79. यण् सन्धि का उदाहरण नहीं है (HTET 2014)
(a) स्वल्प (b) स्वच्छ (c) स्वागत (d) स्वांग
80. निम्नलिखित शब्दों में से किसमें स्वर सन्धि है? (UKTET 2017)
(a) अतएव (b) रजनीश (c) तपोगुण (d) सदाचार
81. 'महोत्सव' का सही सन्धि-विच्छेद क्या है? (UPTET 2016)
(a) महा + उत्सव (b) महो + उत्सव (c) महोत् + सव (d) महे + उत्सव
82. 'यशोदा' में प्रयुक्त सन्धि का नाम है (UPSSSC, Lower-II 2016)
(a) स्वर (b) व्यंजन (c) विसर्ग (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तरमाला

1. (a)	2. (b)	3. (c)	4. (b)	5. (c)	6. (a)	7. (b)	8. (a)	9. (d)	10. (a)
11. (c)	12. (b)	13. (c)	14. (a)	15. (d)	16. (a)	17. (a)	18. (d)	19. (d)	20. (b)
21. (b)	22. (a)	23. (a)	24. (a)	25. (a)	26. (c)	27. (c)	28. (c)	29. (d)	30. (a)
31. (d)	32. (a)	33. (b)	34. (a)	35. (c)	36. (c)	37. (d)	38. (a)	39. (c)	40. (b)
41. (b)	42. (b)	43. (c)	44. (a)	45. (b)	46. (a)	47. (a)	48. (a)	49. (a)	50. (b)
51. (c)	52. (d)	53. (d)	54. (b)	55. (c)	56. (a)	57. (a)	58. (c)	59. (a)	60. (c)
61. (c)	62. (c)	63. (b)	64. (d)	65. (d)	66. (c)	67. (a)	68. (d)	69. (a)	70. (c)
71. (c)	72. (a)	73. (a)	74. (a)	75. (c)	76. (b)	77. (d)	78. (c)	79. (d)	80. (b)
81. (a)	82. (c)								